डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned with CamScanner

उसकी अच्छी सैनिक व्यवस्था का प्रतीक है।

अलाउद्दीन का Control of market मध्यकालीन भारत में एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसने निश्चय किया कि प्रतिदिन जो वस्तुएं व्यवहार में लायी जाती हैं उसका दाम कम कर दिया जाय। इसके लिए उसने कुछ कायदे बनाये जो उसके आर्थिक सुधार कहलाते हैं। इतिहासकार बर्नी के अनुसार - अलाउद्दीन ने मूल्य नियंत्रण शाही सैनिक के लाभ के लिए और राज्य कोष की स्थिति को दृढ़ करने के लिए किया किन्तु इससे वे आर्थिक दरिद्रता का शिकार बने इसलिए उसने सैनिक उपयोग की वस्तुओं के मूल्य कम करने का निश्चय किया। जिससे वे अपना जीवन यापन ठीक से चला सकें।

उसने सर्वप्रथम प्रयोग के अनिवार्य वस्तुओं की सूची बनायी इस सूची के अन्तर्गत प्राप्त वस्तुएं शामिल थी। इसके नियंत्रण को सफल बनाने के लिए पदाधिकारी की नियुक्ति की। उसने शाहनाये मंडी के पद पर मलिक कबुल की नियुक्ति की जो बहुत ही योग्य तथा अनुभवी व्यक्ति था। चूंकि वस्तुओं का दाम उसकी मांग और पूर्ति पर निर्भर करता है। अतः उसने ऐसी व्यवस्था की बजार में किसी वस्तु की कमी न हो। इसके उपरांत उसने राजकीय खेतियों का निर्माण कराया। जिसके लिए अनाज दोआब की खालसा भूमि से प्राप्त किया जाता था। इसका प्रयोग केवल आवश्यकता के समय किया जाता जब बजार में अनाज का अभाव होने लगता कि व्यापारी अनाज आदि

शाहनाये मंडी का यह कर्तव्य था कि

Scanned with CamScanner

वह देखें कि व्यापारी अनाज आदि वस्तुएं निर्धारित भाव पर बेचते हैं या नहीं। बाजारों की सूचना प्राप्त करने के लिए गुप्तचरों की नियुक्ति की गई थी जो उसको प्रतिदिन की समस्त बातों की सूचना दिया करते थे।

बाजार नियंत्रण से संबंधित अधिकारी वर्ग द्वारा वस्तुओं के भाव की सूची तथा वस्तुओं के किस्म का विधिवत विवरण सुल्तान को प्राप्त होने की समुचित व्यवस्था की गई थी। सुल्तान को प्रत्येक दिन मंडी के माल की सूचना एवं मंडी के व्यवस्था का समाचार प्राप्त होता था। बरीद बाजार का समस्त हाल शाहनाह के पास तथा शाहनाह इस सूचना को दीवाने रियासत के पास और दिवाने रियासत सुल्तान के पास भेजता था।

तत्कालीन इतिहासकार बनी का कथन है कि अलाई राज्य के सभी बुद्धिमान मंडी के भाव के स्थायी होने पर चकित तथा स्तब्ध थे कारण कि यदि वर्षा होने पर या फसल के अच्छी पैदावार होने पर मण्डी का भाव स्थायी रहा तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। परन्तु जिस साल वर्षा न होती और अकाल पड़ना सुनिश्चित होता था। दिल्ली में कोई अकाल नहीं पड़ता। यदि वर्षा न होने पर शाहनाहे मण्डी यह निवेश करता है कि अनाज का भाव आधा जीतल बढ़ा दिया जाए तो इसके कारण उसको 20 सौ कोड़े खाने पड़ते। वर्षा न होने पर प्रत्येक मुहल्ले की दैनिक आवश्यकतानुसार मुहल्ले के व्यापारियों को मण्डी से गल्ला प्रदान किया जाता था। कुछ समानों के

मूल्य इस प्रकार थे - गेहूं ½ जीतल प्रति मन, बाजरा 4 जीतल प्रतिमन, चावल 5 जीतल प्रतिमन, दाल 5 जीतल प्रतिमन। लेकिन इससे साधारण मनुष्यों को लाभ नहीं हुआ। दिल्ली के लोगों को जरूर इससे लाभ हुआ पर ये नियम अलाउद्दीन के साथ ही समाप्त हो गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अलाउद्दीन का शासन प्रबंध बहुत उच्चकोटि का था। परन्तु इनसारी बातों के बावजूद भी उसका सुधार स्थायी न रहा। क्योंकि उसका आधार जनमत न होकर सैन्य बल था। उस समय तक उसको सफलता मिली जब तक वह शक्तिशाली था और उसमें अपने नियमों को पालन करवाने की क्षमता रही। उसका नीति ने अमीरों में बड़ा विद्रोह उत्पन्न कर दिया। अतः उसे जब भी अवसर मिला विद्रोह करने से न चुके फिर भी मध्यकालीन भारत में अलाउद्दीन का सर्वश्रेष्ट स्थान है। Dr. S.L Roy choudhary ने लिखा है कि - "Alauddin was first muslim Imperilist and the first muslim Administration of India the history of the muslim empire and muslim administration in India sewllery begins with him"

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम अलाउद्दीन के नागरिक प्रशासन सामाजिक एवं सैनिक सुधार तथा बाजार नियंत्रण की विशेषताओं को देख सकते हैं। तथा हम कह सकते हैं कि अलाउद्दीन मध्यकालीन भारत का एक महान शासक था जिसमें संघर्षित मुस्लिम देशों को बराबर मंगोलों से रक्षा करने की चिन्ता करता था।